संपादक
डॉ. गिरिराजशरण अग्रवाल
डॉ. मीना अग्रवाल

ISSN 0975-735X

UGC APPROVED CARE LISTED JOURNAL

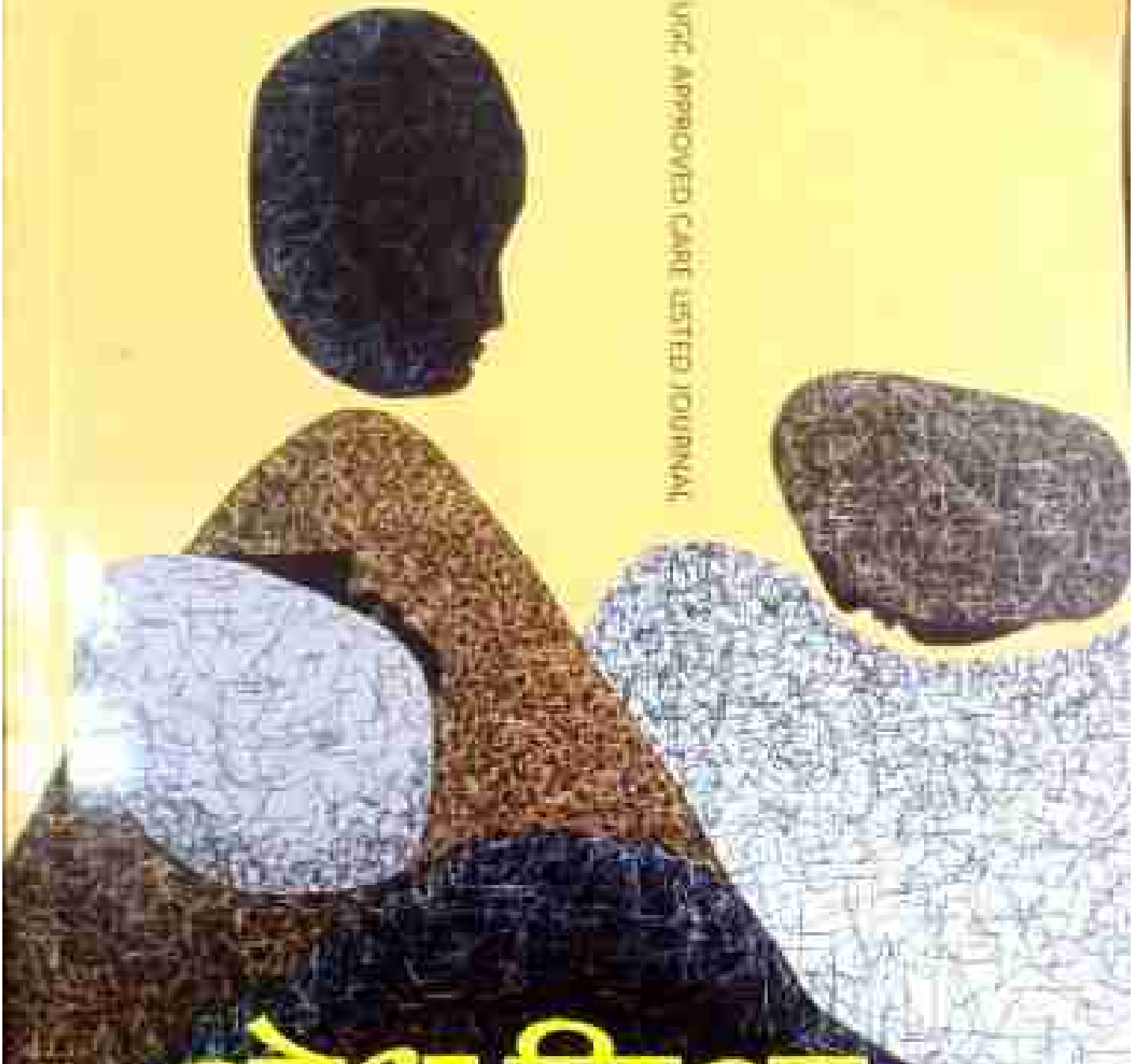

शोध दिशा

59

विभाजनमूलक हिंदी उपन्यासों में विस्थापन और स्त्री-समस्या/
सौरभ सराफ, डॉ॰ अर्चना झा 292
छायावादी युग की कविता में नवगीत की परंपरा/ डॉ॰ गार्गी उपाध्याय 297
शैलेश मटियानी और संजीव की कहानियों के सामाजिक परिप्रेक्ष्य का
सांस्कृतिक दृष्टि से तुलनात्मक अध्ययन/ संदीप कौर 'कोमल' 301
'कल्याणी' उपन्यास और सामाजिक मनोविज्ञान/
डॉ॰ संजय रणखांबे, मुक्ति प्रभात जैन 309
गालिब : आधुनिक चेतना/ डॉ॰ नगमा 315
संतसाहित्य में सामाजिक विकृतियों के विरोध की सार्थकता/ मोनिका 320
सांस्कृतिक और भाषिक समन्वय के प्रहरी राहुल सांकृत्यायन/ डॉ॰ सुमन शर्मा 325
नीरजा माधव के 'पत्थरबाज' कहानी-संग्रह में चित्रित सामाजिक समस्याएँ/
डॉ॰ पूनम 332
ग्रामीण संस्कृति और गोदान/ डॉ॰ प्रकृति राय 336
इक्कीसवीं सदी के कथासाहित्य में आदिवासियों की संवेदनाएँ/ सरोज देवी 340
हरियाणा के लोकगीतों में चित्रित सामाजिक विसंगतियाँ/ सुमन देवी 344
रमेश उपाध्याय की कहानी 'अर्थतंत्र' में व्यक्त
आधुनिकता की चकाचौंध में बिखरते जीवनमूल्य/ योगेश कुमारी 349
प्रसादकाव्य में प्रकृति चित्रण/ बिन्दु मिश्रा 352
राजशेखर की कृतियों में उपन्यस्त अलंकार सौंदर्य/ डॉ॰ सपना जायसवाल 357
विवेकीराय के उपन्यास 'लोकऋण' में भोजपुरी लोकसंस्कृति/
वर्षारानी, डॉ॰ अभिनेष सुराना 363
हिंदी की हास्य व्यंग्य परंपरा और भारतेंदु हरिश्चंद्र/ डॉ॰ देवेन्द्र कुमार 367
संजीव का उपन्यास 'फाँस': कर्ज में डूबे ग्रामीण किसानों की व्यथा/ अनिता 374
चीफ की दावत : मध्यवर्गीय विडंबनाओं का दस्तावेज/ डॉ॰ विजय रवानी 379
जयशंकर प्रसाद के कथासाहित्य में प्रेम का स्वरूप/ जसवन्त सिंह 383
हिंदी साहित्य का आदिवासी स्वर/ डॉ॰ के॰ श्रीलता विष्णु 389
नमितासिंह की कहानियों में अर्थ के आधार पर बदलते पारिवारिक
संबंधों की पड़ताल/ मंजू माली, डॉ॰ मृदुला जोशी 394
प्रतिरोध और प्रतिशोध का स्वर : मंच पर संस्कृत/ डॉ॰ कंचन गोयल 399
संवेदनाओं और नूतन गढ़न का उपन्यास : रेत समाधि/ डॉ॰ मृदुल जोशी 405
प्रकृतिप्रेमी कहानीकार : स्वयंप्रकाश/ डॉ॰ दीपा त्यागी, अंजलि 411
इक्कीसवीं सदी की महिला लेखिकाओं की हिंदी कहानियों में चित्रित समस्याएँ
और चुनौतियाँ/ डॉ॰ पठान रहीम खान 417
सूर्यबाला के उपन्यासों में सामाजिक चेतना की परिपक्वता/ डॉ॰ पारवथा आर॰ 421
रामचरितमानस : काव्यभाषा, सौंदर्यबोध एवं कला संरचना/ रागिनी मिश्रा 427

'कल्याणी' उपन्यास और सामाजिक मनोविज्ञान

डॉ. संजय [illegible]
हिंदी विभाग प्रमुख तथा [illegible]
डॉ. [illegible]
[illegible], [illegible]
[illegible] प्रकाश जैन, [illegible]
[illegible]
विश्वविद्यालय, [illegible]

मानव इस सृष्टि का सबसे श्रेष्ठ प्राणी है। मानव के समूह से ही समाज का निर्माण हुआ है। मनुष्य समाज से अलग नहीं रह सकता। समाज में रहते हुए उसे सामाजिक [illegible] अपना कार्य करना पड़ता है, क्योंकि समाज है तो मनुष्य है। बिना समाज के मनुष्य की और बिना मनुष्य के समाज की कल्पना नहीं की जा सकती। 'वह जब तक जीवित है [illegible] अन्य व्यक्तियों का घेरा उसके साथ है और केवल साथ ही नहीं, अपितु [illegible] रूप से प्रभावित करनेवाला भी है। जो कुछ वह करता है और जो कुछ वह सोचता है, [illegible] व्यक्तिक प्रयत्न कम और सामूहिक प्रभाव का प्रतिफल अधिक है।' सामाजिक वातावरण से प्रभावित होकर ही मनुष्य अपने निर्णय लेता है। क्योंकि अगर समाज के अनुसार उसका व्यवहार न हो तो, फिर वह रहे कहाँ? उसे इसी समाज में रहना है। मनुष्य के [illegible] का सामाजिक मनोविज्ञान के अंतर्गत अध्ययन किया जाता है। सामाजिक मनोविज्ञान, मनोविज्ञान का महत्त्वपूर्ण अंग है। जिसमें व्यक्ति के ऐसे विचार, व्यवहार तथा आचरण का अध्ययन किया जाता है, जो सामाजिक परिस्थिति की उपज है। रवीन्द्रनाथ मुकर्जी के अनुसार 'सामाजिक मनोविज्ञान मानव की मानसिक प्रक्रियाओं की क्रियाशीलता व सामाजिक परिस्थिति में, अन्य व्यक्तियों के साथ अंतःक्रियात्मक संबंधों के संदर्भ में, व्यक्ति के सामाजिक व्यवहारों का वैज्ञानिक अध्ययन है। सामाजिक मनोविज्ञान व्यक्ति के सामाजिक व्यवहारों के मनोवैज्ञानिक तथा सामाजिक आधारों को एक दूसरे के संदर्भ में ढूँढने का प्रयत्न करता है।' साहित्य में समाज का चित्रण किया जाता है। समाज और साहित्य का अनन्य संबंध है और समाज से ही मनुष्य है। इसी कारण साहित्य में सामाजिक मनोविज्ञान का चित्रण मिलता है। हिंदी साहित्य के प्रसिद्ध साहित्यकार जैनेंद्रकुमार के साहित्य में सामाजिक मनोविज्ञान का चित्रण मिलता है। जैनेंद्रकुमार एक मनोविश्लेषणवादी साहित्यकार हैं। इनके साहित्य में मनोविश्लेषणवाद के सामाजिक मनोविज्ञान इस रूप में भी [illegible] रहा है।

जैनेंद्रकुमार का कल्याणी अत्यंत चर्चित उपन्यास है। इनके इस उपन्यास में सामाजिक मनोविज्ञान का चित्रण मिलता है। उपन्यास की प्रमुख पात्र कल्याणी है, जिसके व्यवहार पर सामाजिक वातावरण का प्रभाव दृष्टिगोचर होता है। यह उपन्यास आत्मकथात्मक शैली में लिखा

जाता है। कल्याणी के विवाह उपरांत व्यवहार प्रभावित या परिवर्तित रूप में समाज द्वारा प्रभावित दिखाई देता है। समाज के डर से ही वह विवश होकर डॉक्टर असरानी से विवाह करती है वह उनके द्वारा प्रताड़ित होने पर भी कोई विरोध नहीं करती और उनके साथ रहती है। तत्कालीन, यह उपन्यास स्वतंत्रता के पहले का अर्थात् देश में संविधान लागू होने से पूर्व की सामाजिक परिवेश में लिखा हुआ है। उस समय जो सामाजिक स्थितियाँ थी, उसमें स्त्री की स्वतंत्रता को लेकर कोई विचार नहीं किया जाता था और इसी कारण कल्याणी विलायती शिक्षा पाश्चात्य देश में हुई फिर वह भारत के तत्कालीन सामाजिक नियमों के अनुसार आचरण करती है।

जैनेंद्रकुमार के अधिकतर उपन्यास नायिका प्रधान हैं। कल्याणी भी इनका नायिका प्रधान उपन्यास है। उपन्यास के प्रारंभ में ही कल्याणी की मृत्यु के बारे में पाठकगणों को पता चलता है। कल्याणी की मृत्यु को अभी दो-चार दिन ही हुए हैं कि डॉ. असरानी ने घर में कीर्तन करवाया है, हवन-पूजन करवाया है। वह दूसरा विवाह करनेवाले हैं। इसका कारण है कि बच्चों को नई माँ मिल जाए। परंतु देखा जाए तो समाज की दृष्टि में ऊँचा बनने के लिए, यह कारण दिया जाता है क्योंकि डॉक्टर असरानी यह नहीं कह सकते कि उन्हें स्वयं स्त्री की आवश्यकता है। इससे समाज में उनका जो सम्मानित दर्जा है उसे ठेस पहुँचेगी। उनका यह व्यवहार भी पुरुष प्रधान समाज के अनुरूप है।

कल्याणी पढ़ी लिखी नारी है। विलायत से उसने डॉक्टरी की पढ़ाई की है। असरानी कल्याणी को पाना चाहते हैं और समाज में कल्याणी को बदनाम कर उससे विवाह कर लेते हैं। विवाह के बाद कल्याणी तत्कालीन भारतीय स्त्री के रूप में अपना जीवन बिताना चाहती है परंतु उसके घर पर रहने से अस्पताल की आमदनी बंद हो जाती है। डॉक्टर असरानी को नुकसान होता है और वह कल्याणी को अस्पताल सँभालने के लिए कहते हैं। कल्याणी नहीं चाहती कि अस्पताल सँभाले, परंतु उसे अस्पताल सँभालना पड़ता है। वह विदेश में पढ़ी होने के कारण भी ऐसा क्यों सोचती है? इसका उत्तर उसके पति का संदेह करनेवाला स्वभाव है। डॉक्टर असरानी ने इस संदेह के स्वभाव के कारण कई बार अपनी पत्नी को मारा-पीटा है। एक बार तो कल्याणी को घर से निकाल भी देते हैं फिर पाँच रोज बाद उसे वापस लाते हैं। समाज में कल्याणी को लेकर तरह-तरह की बातें हो रही है कि वह इतने दिन कहाँ रही? किसके साथ रही? असरानी एक लालची कपटी, धूर्त, स्वार्थी व्यक्ति है, जो चाहता है कि पत्नी गृहिणी भी रहे और उन्हें पैसा कमाकर भी दे। कल्याणी डॉक्टर के लिए एक तरह से पैसों की मशीन है। इसी परिस्थितिवश अपने मन में डॉक्टरी करने की इच्छा होकर भी वह पति और समाज के दबाव और प्रभाव से अपना आचरण बदलती है। उसका यह बदला हुआ सामाजिक मनोविज्ञान का विषय है। क्योंकि हर व्यक्ति अपने जीवन में कभी न-कभी अपनी इच्छा को मारकर किसी व्यक्ति के या परिस्थिति के दबाव या प्रभाव से अपना स्वाभाविक आचरण बदलता है।

कल्याणी का जीवन अपने पति के शारीरिक और मानसिक अत्याचार के कारण नरकमय हुआ है। उसने अपनी सारी स्वतंत्रता खो दी है। उसकी मरने की इच्छा है पर मरती नहीं अर्थात् वह अपनी इच्छा के विरुद्ध जीवित है। देखा जाए तो व्यक्ति की इच्छा होती है कि उसे नारकीय जीवन से छुटकारा मिल जाए, जैसे उपन्यास के कई प्रसंगों से यह बात स्पष्ट होती है कि कल्याणी भी मृत्यु चाहती है पर मरती नहीं क्योंकि उसका कारण है कि वह गर्भवती है, बच्चे के लिए वह जीवित है भले ही वह उसका खुद का बच्चा हो परंतु वह भी समाज का हिस्सा है। अगर वह कुछ ऐसा करती है तो समाज क्या कहेगा कि अपने साथ इसने एक बच्चे की भी जान

 ISSN 0975-735X

है तो वहाँ आकर वह ऐसा नहीं करती। अपनी इच्छाओं को मारकर 'लोग क्या कहेंगे'? इस सोच के साथ आचरण सामाजिक मनोविज्ञान के अंतर्गत आता है।

उपन्यास में वकील साहब (लेखक) एवं श्रीधर के माध्यम से कल्याणी का चरित्र उभरकर सामने आता है। कल्याणी ने भले ही विलायत से शिक्षा प्राप्त की हो, परंतु वह भारतीय नारी के रूप में यहाँ चित्रित होती है। सब कुछ जानते हुए पति द्वारा प्रताड़ित है। सामाजिक बंधन या दबाव उसे पति से अलग रहने की अनुमति नहीं देते। उसका यह सब कुछ सहना और अपनी भावनाओं, इच्छाओं को मारकर किसी व्यक्ति या समाज के नियमों के अनुसार आचरण करना भी व्यक्ति का सामाजिक मनोविज्ञान होता है। जैनेंद्र कुमार जी ने कल्याणी के माध्यम से मनुष्य के इसी आचरण को दर्शाया है।

कल्याणी एक योग्य डॉक्टर है और डॉक्टर असरानी के धन अर्जन करने का एक साधन है। अपने फायदे के लिए वह दिल्ली में एक पार्टी रखते हैं और कल्याणी के विलायती मित्र जिससे कल्याणी प्रेम करती है, प्रीमियर को उसमें आमंत्रित करता है उसके सामने कल्याणी को लाता है ताकि उसको व्यवसाय में लाखों का फायदा हो सके। प्रीमियर कल्याणी के विलायती मित्र हैं परंतु उससे कल्याणी विवाह नहीं कर पाती। प्रीमियर का चित्रण उपन्यास के अंत में किया जाता है। कल्याणी को न चाहते हुए उसे उस पार्टी का हिस्सा बनना पड़ता है। 'अधिक से-अधिक वहाँ बैठे-बैठे दोनों हाथ जोड़, वह लोगों की अभिवंदना स्वीकार लेती, अन्यथा तो मानो उसको देखने तक को सुध न थी। जैसे वह वहाँ अपने को निबाह-भर रही थी, और नहीं के बराबर बोलती थी।" पति द्वारा त्रस्त होते हुए भी वह समाज में अपनी भूमिका बखूबी निभाती है। उसके आचरण से स्पष्ट है कि वह पार्टी में जाना नहीं चाहती परंतु अगर नहीं गई, तो 'लोग क्या कहेंगे?' या वह पति का अपमान होगा। इसी कारण न चाहते हुए भी पार्टी में सम्मिलित होती है। कल्याणी का यह व्यवहार भी अपनी इच्छा नहीं बल्कि समाज की मानसिकता, भय तथा दबाव के कारण है।

संपूर्ण उपन्यास में ऐसे कई प्रसंग हैं जिससे स्पष्ट होता है कि कल्याणी का व्यवहार कहीं-न-कहीं समाज द्वारा प्रभावित है। वह पति द्वारा प्रताड़ित होने पर भी समाज में पति की शोभा ही करती है कि डॉक्टर उसके पति हैं और उन्हें अधिकार है कि वह उसे जैसे चाहे रखें। वह कहती है–'शारीरिक कष्ट के अलावा वह मुझे और कष्ट नहीं दे सकते। मैं अपने ऊपर उनके प्रेम के भाव को जानती हूँ। प्रेम करते हैं, इसी से मार तक सकते हैं, लेकिन वह छोड़िए। मेरे शरीर को उन्होंने इतने साल सज्जा में रखा है, अगर उसको वह कड़ी चोट भी दें तो उनको अधिकार है।" यहाँ कल्याणी पर परंपरागत स्त्री का प्रभाव दृष्टिगत होता है। भारतीय सामाजिक परिवेश में स्त्री पर पति द्वारा अत्याचार करना स्वाभाविक माना जाता रहा है। इसे गलत नहीं माना जाता था। इसी परंपरागत सोच को जैनेंद्र कुमार ने कल्याणी की सोच के माध्यम से अंकित किया है।

उसके मन में पति को लेकर क्रोध है जो उपन्यास के कई प्रसंगों द्वारा ज्ञात होता है वह स्वयं ही कहती है कि 'वह पैसे बनाने की केवल एक मशीन है- साफ-साफ कह क्यों नहीं देते कि तुम क्या चाहते हो? मुझे तिल-तिलकर बेचना चाहते हो, सो वह तो हो रहा है। आखिरी बोली तक मेरा बिक जाएगा, तब भी मैं इंकार नहीं करूँगी; लेकिन इसके बाद तुम मुझे अपनी रोटी क्यों नहीं देते हो?" यहाँ वह आवेश में आकर कह तो देती है परंतु बाद में जब उसे ध्यान आता है कि वकील साहब भी बैठे हैं, तो खुद को सँभालती है और उन्हें जाने के लिए कह

देती है क्योंकि वह समाज के सामने कभी अपनी पीड़ा नहीं दिखाती। क्योंकि नारी का यह स्वभाव है कि वह अपना दुःख-दर्द दुनिया के सामने जाहिर नहीं होने देती और कभी आवेश में मुँह से कुछ निकल भी जाए तो तुरंत रोक लिया जाता है। आवेश जिसे रोकना बड़ा मुश्किल होता है, मनुष्य सामाजिक नियमों, मान्यताओं के कारण उसे भी रोकता है। इस तरह से समाज अप्रत्यक्ष रूप से मनुष्य के आचरण को प्रभावित करता है, इसी मनोवैज्ञानिक सत्य का जैनेंद्र जी ने बयान किया है।

कल्याणी पढ़ी लिखी थी, चाहे तो वह विवाह न करती या बाद में पति का अलग होकर अकेली रह सकती थी, परंतु हम जिस समाज में, जिस काल में रहते हैं, वहाँ की संस्कृति, समाज, देश की मान्यताएँ, लोग हर व्यक्ति को अपनी मर्जी से विवाह करने की स्वतंत्रता नहीं देती, न ही विवाह के बाद अकेले रहने की। कल्याणी के साथ भी यही हुआ है। उसके आचरण से यह बात पता नहीं चलती है कि वह विवाह करना चाहती है या नहीं। लेकिन डॉक्टर असरानी स्वार्थवश, सामाजिक नियमों का दबाव डालकर उसे शादी करने के लिए राजी कर लेता है। देखा जाए तो व्यक्ति निजी तौर पर अपनी बदनामी, अपने सम्मान को बचाने का प्रयत्न करता है। अर्थात कल्याणी ने विवाह अपनी मर्जी से नहीं, बल्कि सामाजिक नियमों के भय से, बदनामी के डर व दबाव में आकर किया। उसका यह आचरण उसका अपना न होकर समाज परंपराओं का वहन है। जो "यह यूरोप नहीं कि बड़ी उम्र तक तुम कुँवारी रहो और समाज में स्थिति पा सको।" ऐसा कहकर डॉक्टर असरानी कल्याणी से कहलाता है।

कल्याणी विलायत के स्वतंत्र माहौल में रही है। यहाँ आने के बाद भारतीय संस्कारों से वह भयभीत भी है और प्रभावित भी। डॉक्टर असरानी इन्हीं परंपराओं का लाभ उठाकर कल्याणी पर दबाव डालते रहते हैं, 'कानून हिंदू स्त्री को हक नहीं देता। पैसे पर अधिकार मेरा है। तुम समझती हो, तुम कमाती हो? लेकिन तुम आज मुँह भी उठा सकती हो, तो मेरी बदौलत।' इन्हीं सभी सामाजिक मान्यताओं के चलते कल्याणी अपनी इच्छा के विरुद्ध आचरण करती है और पति के अत्याचारों को सहती है। इस संबंध में डॉ. मधुलिका का मत द्रष्टव्य है—'कल्याणी के व्यक्तित्व में विद्रोह का भाव तो है किंतु यह विद्रोह कभी प्रकट रूप में सामने नहीं आता है। इसका कारण यह है कि डॉक्टर असरानी अपने आपको समाज में इस ढंग से प्रस्तुत करते हैं कि जिससे समाज उनका सही व्यक्तित्व नहीं देख पाता है।"

कल्याणी के पति ने समाज में अपनी एक अच्छी छवि बनाकर रखी है। समाज के सामने तो वह दिखावे के लिए कल्याणी की प्रशंसा करते हैं, परंतु बाद में उसे प्रताड़ित करते हैं। कल्याणी यह जानती है, इसी कारण वह इस प्रशंसा को भी नहीं सह पाती। 'आप इनकी बात पर न जाइएगा। यह मुझको क्यों कहते हैं। (कहती हुई कुछ विद्रूप हँसी में हँसी और मुस्कराकर पति प्रसन्न हुए।) और इनको अपनी कहने का मजा है।" कल्याणी के इस कथन के पीछे उसकी पीड़ा है, एक व्यंग्य है। क्योंकि सभी मित्रों के सामने वह उन्हें कुछ नहीं कह सकती। यहाँ वह पति के विश्वास का विरोध कर सकती थी लेकिन उसने नहीं किया। उसका यह व्यवहार समाजजन्य है।

डॉक्टर असरानी कल्याणी से छल से विवाह करके भी उसे पा न सके। इस बात का उन्हें अत्यंत क्षोभ है। ''आप कहेंगे कि अपनी भावी पत्नी के विषय में झूठे लांछन का प्रचार मैं ही किस प्रकार कर सका, लेकिन किसी और तरह मेरी कामना पूरी हो न सकती थी। पर विवाह से भी क्या मनोरथ मेरा पूरा हुआ?'' डॉक्टर असरानी के इस कथन से स्पष्ट है कि उन्होंने कल्याणी से विवाह उसे मजबूर करके किया। उन्हें कल्याणी से प्रेम था यह कतई नहीं कहा जा सकता।

ISSN 0975-735X

उन्हें दिखाता है अपने किए पर, परंतु यह पश्चाताप भी सामाजिक मनोविज्ञान के अनुसार है, समाज को दिखाने के लिए और सहानुभूति अर्जित करने के लिए ये सब करता है। अगर वह सच में दुखी होता तो वह कल्याणी को बीमारी की अवस्था में छोड़कर जाने का विचार नहीं करता। पर समाज तो उनके जीवन में सर्वश्रेष्ठ दिखाई देता है। कल्याणी का अस्पताल [illegible] के लिए कहते हैं, वह नहीं चाहती कि वह डॉक्टरी संभाले, परंतु डॉक्टर असरानी के कहने पर वह ऐसा करती है क्योंकि डॉक्टर असरानी डॉक्टरी में इतने कुशल नहीं हैं, जितनी कल्याणी कुशल है। लोग कहते हैं तो कल्याणी विलायत में पढ़ी-लिखी है, असमंजस में चाहती है कि पद भी डॉक्टरी का, परंतु पति के शंकालु स्वभाव की वजह से वह नौकरी नहीं करना चाहती पर [illegible] कहती है- 'दोनों में से कोई एक चुनकर दे दो- पतिव्रत या डॉक्टरी। मैं पति की परवाह न करूँ या डॉक्टरी की कमाई करके दूँ, दोनों साथ होना कठिन है।' कल्याणी के घर पर अस्पताल भी बंद हो जाती है और पति उसे फिर से अस्पताल में बैठने के लिए कहता है। वह पति की बात मानती है और अस्पताल का कार्य संभालती है, परंतु डॉक्टर असरानी अपने शक के कारण कल्याणी को मारते-पीटते हैं। कल्याणी में भारतीय परंपरा के संस्कार दृढ़ रूप में विद्यमान हैं, इसी कारण वह अपनी इच्छा के विरुद्ध यह अन्याय सहती है। डॉ. मधुलिका जी लिखती हैं-'कल्याणी विलायत से डॉक्टरी पास करके आई है और यहाँ प्रैक्टिस शुरू करती है। वैसे वह स्वच्छंद वातावरण में पली है, परंतु उस पर भारतीय पतिव्रता के संस्कार अमिट रूप में दिखाई देते हैं।' कल्याणी के यही संस्कारगत व्यवहार सामाजिक मनोविज्ञान में आते हैं। वह चाहती तो है कि निःशुल्क अस्पताल खोले, पर कुछ कर नहीं पाती। वह सोचती तो बहुत है परंतु कर नहीं पाती। इसके निर्णय सामाजिक नियमों के अनुसार होते हैं।

उपन्यास में कई ऐसे स्थान हैं, जहाँ कल्याणी की असमर्थता प्रकट होती है। कल्याणी कुछ न कर पाने की छटपटाहट में सदैव बेचैन रहती है। वह एक ऐसी नारी है जो इतनी पढ़ी-लिखी होते हुए भी पति के अत्याचारों को सहन करती है। उसका व्यवहार घर में अलग होता है, और समाज के सामने उसका रूप अलग होता है- 'सच पूछिए तो मुझे उनका उल्लास सुखकर नहीं हुआ। जैसे वह भीतर कुछ और हों। जिसे ओढ़ लेने में काम बनने में मदद मिलती है। [illegible] से स्वाभाविकता को अन्यथा दिखा सकें।' कल्याणी समाज को दिखाने के लिए तो खुश है परंतु उसकी आंतरिक पीड़ा अत्यंत गहरी है। उसका यह बाह्य व्यक्तित्व समाज की मान्यताओं, रीति-रिवाजों और नियमों की देन है।

निष्कर्ष रूप में हम कह सकते हैं कि उपन्यास में कल्याणी का जो व्यवहार है, समाज से प्रभावित है। वह अपने पति के स्वभाव को जानकर एक भारतीय गृहिणी बनकर रहना चाहती है। वह सामाजिक परंपरा के अनुसार स्त्री की जो छवि है उसी प्रकार अपना जीवन बिताना चाहती है। यही कारण है कि वह पति के अत्याचार सहन करती है। न चाहते हुए भी अपना जीवन समाज की मान्यताओं के अनुसार जीती है। वह खुलकर इसका विरोध नहीं कर पाती और सामाजिक नियमों के चलते अपने प्राण त्याग देती है। सामाजिक मनोविज्ञान में व्यक्ति के इसी तरह के व्यवहार का अध्ययन किया जाता है, जो समाजजन्य है। उपन्यास में कई ऐसे प्रसंग हैं जिनसे यह स्पष्ट होता है कि उसका व्यवहार कहीं-न-कहीं समाज द्वारा प्रभावित है। अतः कहा जा सकता है कि 'कल्याणी' उपन्यास में न केवल कल्याणी की निजी मानसिकता को जैनेंद्र जी ने चित्रित किया है बल्कि व्यक्ति की सोच और मानसिकता पर समाज किस तरह से हावी होता

है, इसे भी अंकित किया है।

संदर्भ

1. सामाजिक मनोविज्ञान की रूपरेखा, रवीन्द्रनाथ मुकर्जी, किताब महल, पृ॰ 2
2. वही, पृ॰ 10
3. कल्याणी एवं जैनेंद्रकुमार, भारतीय ज्ञानपीठ, पृ॰ 94
4. वही, पृ॰ 62
5. वही, पृ॰ 41
6. वही, पृ॰ 62
7. वही, पृ॰ 62-63
8. हिंदी उपन्यास का मनोविज्ञान तथा जैनेंद्र के उपन्यास, डॉ॰ मधुलिका, साहित्य सदन, पृ॰ 21
9. कल्याणी, जैनेंद्रकुमार, भारतीय ज्ञानपीठ, पृ॰ 12
10. वही, पृ॰ 106
11. वही, पृ॰ 32-34
12. हिन्दी के सामाजिक उपन्यासों में नारी, डॉ॰ रेखा कुलकर्णी, लोकलोक प्रकाशन, पृ॰ 141
13. कल्याणी, जैनेंद्रकुमार, भारतीय ज्ञानपीठ, पृ॰ 38

ISSN 0975-735X